ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2023; 9(8): 286-289
www.allresearchjournal.com
Received: 11-07-2023
Accepted: 20-08-2023

रूबी कुमारी
शोधार्थी, शिक्षा संकाय, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वर नगर, दरभंगा, बिहार, भारत

डॉ० रेनू कुमारी
सह- प्राध्यापक, डॉ० ज़ाकिर हुसैन टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, लहेरियासराय, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
रूबी कुमारी
शोधार्थी, शिक्षा संकाय, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वर नगर, दरभंगा, बिहार, भारत

माध्यमिक स्तर की हिंदी पाठय पुस्तकों में लैंगिक समानता के प्रति संवेदनशीलता का विश्लेषणात्मक अध्ययन

रूबी कुमारी, डॉ० रेनू कुमारी

सारांश
माध्यमिक स्तर की हिंदी पाठय पुस्तकों में लैंगिक समानता के प्रति संवेदनशीलता का विश्लेषण करते समय, हमें समानता, शिक्षा, और सभी छात्रों के सामाजिक और मानसिक विकास को प्रमोट करने के उपायों को बढ़ावा देने के लिए काम करने की आवश्यकता है। यह सामाजिक सुधार का माध्यम बन सकता है और एक समर्थन और समान समाज की दिशा में कदम बढ़ा सकता है। पाठ्य पुस्तको में लैंगिक समानता लाने तथा महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने वाले प्रसंग व प्रकरण जोड़े जाने के बाद जनमानसिकता व जनमत में काफी परिवर्तन आया है तथा भविष्य में लैंगिक असमता की सोच एवं तदनुसार आचरण पर धीरे-धीरे कभी आएगी। निश्चय ही सामाजिक परिवर्तन लाने में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।मा ध्यमिक स्तर के हिंदी पाठ्य-पुस्तकों में कहानियों, गद्य-पाठों व निबंधों, इत्यादी लैंगिक समानता के पाठ्यक्रम विषय को जोड़ कर उन्हें जो शिक्षा की जा रही है इसका छात्र-छात्राओं के जीवन पर अनुकूल प्रभाव पड़ा है।

कूटशब्द : हिंदी, लैंगिक समानता, शिक्षा, महिला सशक्तिकरण

प्रस्तावना
माध्यमिक स्तर के शिक्षा प्रणाली में हिंदी भाषा का महत्वपूर्ण स्थान है, और हिंदी पाठय पुस्तकें छात्रों के अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण होती हैं। इन पुस्तकों का संरचना, साहित्यिक सामग्री, और शैली का महत्वपूर्ण भूमिका खेलता है। इसलिए, यह महत्वपूर्ण होता है कि इन पाठय पुस्तकों में लैंगिक समानता के प्रति संवेदनशीलता का विशेष ध्यान दिया जाए। इस अध्ययन में, हम इस प्रश्न पर ध्यान केंद्रित करेंगे कि माध्यमिक स्तर की हिंदी पाठय पुस्तकों में लैंगिक समानता के प्रति संवेदनशीलता का विश्लेषण कैसे हो सकता है।

माध्यमिक स्तर की हिंदी पाठय पुस्तकों में लैंगिक समानता का मुद्दा आमतौर पर छात्रों के अध्ययन के दौरान सामने आता है। यह मुद्दा विशेष रूप से छात्रों के मनोबल को प्रभावित कर सकता है और उनके विचारों को प्रभावित कर सकता है। इसलिए, हिंदी पाठय पुस्तकों में लैंगिक समानता के प्रति संवेदनशीलता का महत्व होता है।

पाठ्य पुस्तकों को शिक्षा एवं सामाजिक परिवर्तन का एक औजार भी कहा जाता है। पाठ्य पुस्तकों के माध्यम से सामाजिक मूल्यों, मानकों और सामाजिक अपेक्षाओं को छात्रों तक पहुँचाया जाता है। यूनेस्को (2009) की एक रिपोर्ट के अनुसार, पाठ्य-पुस्तकें समाजीकरण का वाहन होती हैं जो ज्ञान और मूल्य प्रदान करती हैं। यूनेस्को के अनुसार, "पाठ्यपुस्तकों में अधिकार आधारित उपागम का पालन करना चाहिए। इसलिए पाठ्यपुस्तकों में भेदभाव, असहिष्णुता और रूढ़िवादिता का निष्कासन होना चाहिए। पाठ्य पुस्तकों को ऐसे मूल्यों का निर्माण करने वाला होना चाहिए जो समाज के सभी सदस्यों को शान्ति और गौरवमय जीवन प्रदान कर सके। इस आधार पर ऐसी पाठ्य पुस्तकों के निर्माण की आवश्यकता है जो भेदभाव से दूर हो और सभी सदस्यों की गरिमा को बनाए रखें।

जेंडर मुद्दा इस तथ्य पर बल देता है कि शारीरिक संरचना के आधार पर लड़के तथा लड़कियों के मध्य प्राकृतिक असमानताओं को तो स्वीकार किया जा सकता है परन्तु सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक आधार पर पुरुष व स्त्री में मतभेद करने का कोई औचित्य नहीं है। ऐसा करना मानवता व मानव अधिकारों की धारणा के नितांत विपरीत है। जेंडर असमता का व्यवहार कुत्सित है, त्याज्य है। यह धारणा भी वर्तमान में विकसित हो रही है कि शताब्दियों से विश्व में जेंडर असमानता विद्यमान है तथा उसकी अग्नि में विश्व की आधी आबादी वाली महिलाएं जल रही हैं अतः नयी पीढ़ी हेतु विद्यालयीन पाठ्यक्रम में तथा पाठ्य पुस्तकों में जेंडर समानता लाने तथा महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने वाले प्रसंग व प्रकरण जोड़े जाने चाहिए जिनसे जनमानसिकता व जनमत में परिवर्तन आएगा तथा भविष्य में जेंडर असमता की सोच व तदनुसार आचरण पर धीरे–धीरे कमी आएगी।

निश्चय ही सामाजिक परिवर्तन लाने में शिक्षा की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षा जनमत के निर्माण तथा अच्छे नागरिक की भूमिका निभाने हेतु छात्र–छात्राओं को तैयार करती है। विद्यालयों तथा उच्च शिक्षा की संस्थाओं में लैंगिक असमता तथा उसके दुष्परिणामों महिला के विकास में बाधक तत्त्वा, महिला कल्याण व महिला सशक्तिकरण, लेगिक संवेदनशीलता महिलाओं की पारिवारिक व सामाजिक समस्याओं, महिलाओं के विरुद्ध हिंसा विषयक अपराधों. काननी प्रावधानों, जेंडर अंतराल आदि विषयों को सम्मिलित कर छात्रों तथा छात्राओं में जेंडर भमिकाओं का प्रतिनिधित्व किया जा सकता है । इस हेतु विद्यालयीन महाविद्यालयीन पाठ्यक्रमों तथा पाठ्य पुस्तकों की पुनर्रचना आवश्यक है।

पाठयक्रम व पाठ्य पुस्तकों में प्राथमिक स्तर, माध्यमिक स्तर, उच्चतर माध्यमिक स्तर तथा महाविद्यालयीन स्तर सभी स्तरों में जेंडर भूमिकाओं का प्रतिनिधित्व कक्षा स्तर के अनुरूप किया जा सकता है। प्राथमिक स्तर पर कहानियों, गीलों, अभिनय गीतों, नारों, सुविचार वाक्यों, चित्रों, पोस्टरों. स्मार्ट क्लास में विजुअल प्रदर्शनों,टीम भावना की की जाने वाली छात्र–छात्राओं की सांस्कृतिक, शैक्षिक गतिविधियों तथा शाला परिसर में जेंडर असमता विरोधी तथा जेंडर समता संबंधी बालक–बालिकाओं के आचरण द्वारा प्राथमिक स्तर के बालक–बालिकाओं के अनुरूप पाठ्यक्रम बनाकर तथा सचित्र आकर्षक,रंगीन पाठ्य पुस्तकों के द्वारा जेंडर समानता के प्रयास किये जा सकते हैं। पाठयक्रम व पाठय पस्तक के कक्षा शिक्षण में शिक्षक–शिक्षिका का प्रयास वास्तव में छात्र हित करने का तथा जेंडर असमता के उन्मूलन का होना चाहिए।

राष्ट्र-स्तर पर पाठ्य पुस्तकों में लैंगिक असमानता (Gender Inequality in Text Book at the National Level) विभिन्न विद्वानों के द्वारा किए गए शोधों में पाठ्य पुस्तकों में व्याप्त लैंगिक असमानता को निम्न रूप से देखा गया है-

मैक्केब (McCabe) ने 2011 में यह निष्कर्ष निकाला कि पुस्तकों के शीर्षकों में पुरुषों का प्रतिनिधित्व महिलाओं के मुकाबले दो गुना था। बच्चों की पुस्तकों में पितृसत्तात्मक लैंगिक व्यवस्था को बढ़ावा मिला।

महिलाओं की पहली तरंग' आन्दोलन और 'दूसरी तरंग' आन्दोलन के बीच के समय में (1930-1960) पाठ्य-पुस्तकों में महिलाओं का सबसे कम प्रतिनिधित्व देखने को मिला। NCERT के द्वारा पाठ्य पुस्तकों को ऑडिट करने के बाद पता चला है कि "यद्यपि NCERT की पुस्तकों में लैंगिक समानता को काफी प्रोत्साहित किया गया इसके उपरान्त भी इन पुस्तकों में परम्परागत लैंगिक भूमिका देखने को मिलती है।"

एन.सी.ई.आर.टी. की प्राथमिक कक्षाओं की 18 पुस्तकों में पुरुषों को किसी न किसी उद्यम से ही जोड़ा गया है जबकि महिलाओं को घर काम-काज तक ही सीमित भूमिका में दर्शाया गया है। छोटे बच्चों के मन में प्रारम्भिक स्तर से ही लैंगिक असमानता का बीज बोया जाएगा तो लैंगिक समानता का लक्ष्य हासिल करना बहुत मुश्किल हो जाएगा।

कुछ प्रसंगों में महिलाओं को नर्स, डॉक्टर और शिक्षिका के रूप में भी बताया गया है। इस सम्बन्ध में मानव संसाधन विकास मन्त्रालय ने विद्यालयों के पाठ्यक्रमों में लैंगिक संवेदनशीलता को बढ़ावा देने के लिए नैतिक शिक्षा के अन्तर्गत उन अध्यायों को जोड़ने के लिए कहा है जो महिलाओं के प्रति बढ़ती हिंसा के प्रति जागरूकता एवं संवेदनशीलता में बढ़ोत्तरी कर सकें जिससे महिलाओं के प्रति सम्मान विकसित हो सके। पाठ्य पुस्तकों में वैश्विक स्तर पर लैंगिक भेदभाव के निम्नलिखित ढाँचे देखने को मिलते हैं-

1. स्त्रियों तथा लड़कियों को कम प्रतिनिधित्व मिलता है।
2. विषय-वस्तुओं और उदाहरणों में स्त्रियों और लड़कियों को परम्परागत भूमिकाओं में बताया जाता है।
3. लड़कियों और महिलाओं को निष्क्रिय भूमिकाओं के रूप में ही वर्णित किया जाता है।

उपरोक्त वर्णित परिस्थितियाँ पाठ्यचर्या में प्रत्यक्ष रूप से परिलक्षित हों या न हो अप्रत्यक्ष रूप में लैंगिक भेदभाव देखने को मिल ही जाता है। जब तक पाठ्य पुस्तकों में लैंगिक भेदभाव को समाप्त नहीं किया जाता जब तक लैंगिक समानता का लक्ष्य प्राप्त करना मुश्किल लगता है। प्रायः देखा जाता है कि 70-95 प्रतिशत कक्षा का समय पुस्तकों को पढ़ने, पढ़ाने में ही खर्च होता है। इतने अधिक समय तक यदि लैंगिक भेदभाव की बातें सामने आती रहें तो लैंगिक असमानता को समाप्त कैसे किया जा सकता है। जस्टिस वर्मा समिति ने विद्यालय के सभी स्तरों पर लैंगिक असामनता को कम करने के लिए पाठ्यक्रमों में लैंगिक समानता को जोड़ने की सिफारिश की है।

पाठय पुस्तकों में लैंगिक समानता के प्रति संवेदनशीलता का विश्लेषण

समान विशेषता का पालन: पाठय पुस्तकों में लड़कों और लड़कियों को समान विशेषता के साथ प्रस्तुत करना आवश्यक है। इसका मतलब है कि पाठय पुस्तकों में लड़कियों और लड़कों के कार्यों, सपनों, और प्रेरणास्त्रोत को समान महत्व देना चाहिए।

समान अवसरों का प्रवर्द्धन: पाठय पुस्तकों में लड़कियों और लड़कों को समान अवसरों का प्रवर्द्धन करना चाहिए, चाहे वो शिक्षा, खेल, कला, या किसी अन्य क्षेत्र में हो। इसके माध्यम से, छात्र लड़कों और लड़कियों के बीच समानता की महत्वपूर्ण भूमिका का आदर करेंगे।

जागरूकता और शिक्षा: पाठय पुस्तकों में छात्रों को लैंगिक समानता के महत्व के बारे में शिक्षा देना चाहिए। छात्रों को लैंगिक समानता के गुणों और महत्व के बारे में समझाया जाना चाहिए ताकि वे इसे समर्थन देने के लिए तैयार हो सकें।

सुसंगत सामग्री का चयन: पाठय पुस्तकों में सामग्री का चयन करते समय, लैंगिक समानता को प्रमोट करने वाले उदाहरणों का चयन करना महत्वपूर्ण है। इससे छात्रों को समझ में आएगा कि लैंगिक समानता क्या होती है और वे इसे कैसे अपने जीवन में लागू कर सकते हैं।

लैंगिक समानता के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण: पाठय पुस्तकों में छात्रों को लैंगिक समानता के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। छात्रों को यह जागरूक करना चाहिए कि लैंगिक समानता समाज के विकास में क्यों महत्वपूर्ण है और वे इसके लिए कैसे योगदान कर सकते हैं।

निष्कर्ष:

माध्यमिक स्तर के किशोर बालक–बालिकाओं में लैगिक संवेदनशीलता तथा तदनुसार आचरण का प्रयास नितांत आवश्यक है अन्यथा उनक विधामा कमार्गी होने की आशंकाएं हो सकती हैं। इस स्तर पर महापरुषों तथा महान नारिया कावामन क्षेत्रों में लैंगिक समानता लाने के प्रयासों की कहानियों, कविताओं, गद्य पाठों व निबंध, सामान विज्ञान, हिन्दी की पुस्तिकाओं में जेंडर समता के विषय पाठ्यक्रम व पाठ्यपुस्तकों के रूप में किए जाने चाहिए। इस स्तर पर पाठ्य सहगामी क्रियाओं,खेलकूद, वार्षिकोत्सव, विद्यालयात वार्षिक पत्रिकाओं में शिक्षक व छात्र–छात्राओं के लेखों द्वारा भी जेंडर समानता को पाठ्यक्रम में व पाठय पुस्तकों में जोड़ा जा सकता है। सहशिक्षा वाले माध्यमिक विद्यालय म अत्यन्त संवेदनशीलता व सूझ बूझ के साथ पाठ्य सहगामी क्रियाएं अपेक्षित हैं । यदि विद्यालया। बालिकाओं के साथ बालकों के छेड़छाड, भद्दे कमेंट्ट करना फिल्मी गानों द्वारा बालिका का तंग करना जैसे आचरण के विरुद्ध शक्ति से कदम उठाए जाने चाहिए। विद्यालय में पाठ्यक्रम का स्वरूप विद्यालय के समस्त

जीवन से संबंधित है अत: जेंडर समानता के सैद्धान्तिक ज्ञान क साथ व्यावहारिक क्रियाएं भी इस शिक्षा स्तर पर आवश्यक हैं। शिक्षक–शिक्षिकाओं का आचरण भी मर्यादित होना चाहिए ताकि उनके अनुचित व्यवहार छात्रों पर कुप्रभाव न डालें । कार्यस्थल पर महिलाओं के शोषण जैसी छोटी–मोटी घटनाओं को गंभीरता से लेना होगां ताकि तमाम पाठ्यक्रम व पाठ्य पुस्तकों का जेंडर समानता के लक्ष्य प्राप्त करने के मार्ग में अवरोध प्रतिरोध न हो।

संदर्भ

1. लिंग, विद्यालय एंव समाज, त्रिपाठी प्रतिमा, अग्रवाल पब्लिकेशनन्स, आगरा, 2016
2. जेंडर विद्यालय एंव समाज, सेवानी अशोक, शिक्षा प्रकाशन, जयपुर, 2016
3. जेंडर विद्यालय एवं समाज, दत्ता संजय एवं विजयवर्गीय दीपिका, श्री कविता प्रकाशन, जयपुर, 2017
4. जेंडर विद्यालय एंव समाज, सिडाना अशोक, शिक्षा प्रकाशन, जयपुर, 2016
5. शिक्षा में लैंगिक मुददें, सुवालका दीपिका, शिक्षा प्रकाशन, जयपुर, 2016
6. लिंग, विद्यालय एंव समाज, जैन दीप्ति, राखी प्रकाशन, आगरा, 2017